1

525

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	Vivek Yadav	Subject/Code:	
UPSC Roll No:	7810112	Date:	18/08/24
Drishti Id:		E-mail Id:	
Centre:	mukharjee nagar confrence hall	Medium:	Hindi

Test Code: Essay-06

Time allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

(To be filled by Evaluator only)		
	Max. Marks	Marks Obtained
	(Essay Topic No.)	(Marks)
Section-A		
Section-B		
Total		
Overall Feedback		

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only			
Time Taken	Start Time: End Time:	Student Signature	
Mode of Examination	Online ☐ Offline ☐		

For Office Use Only				
Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	**मापदण्ड/Parameters**	**Max. Marks**	**Section-A (Essay-1)**	**Section-B (Essay-2)**
1.	**परिचय:** विषय और संलग्नता की स्पष्टता। **Introduction:** Clarity of theme and engagement.	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject** of the essay to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: (125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic:

टूटे हुए इंसानो की मरम्मत करने की तुलना मे मजबूत बच्चा बनाना आसान है।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था, एक युग के अंत के रूप मे इंग्लैण्ड सहित पश्चिमी यूरोपीय ताकतवर राष्ट्र यथा फ्रांस, जर्मनी --- की आर्थिक शक्ति ध्वस्त हो चुकी थी; सोवियत संघ और अमेरिका के रूप मे महाशक्तियो का उभार हो रहा था, उनके द्वारा ब्रिटेन और फ्रांस जैसी जर्जर होती अर्थव्यवस्थाओ और ढलते सूरज के बजाय नवोदित तृतीय विश्व के राष्ट्रो की ओर रुख किया, और न केवल उपनिवेशवाद समाप्ति को महत्वता दी, बल्कि इन भारत सहित

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका देशो से अपने-अपने गुटो मे शामिल करने की भरपूर कोशिश की, पर प्रश्न यह उठता है कि उन्होने ऐसा क्यों किया ?

इसका जवाब है, कि ये नए स्वतंत्र राष्ट्र ऊर्जा से परिपूर्ण थे, ये नवोदित थे और अपने विकास की पटकथा लिखना चाहते थे, इनके पास युवा शक्ति थी, साहस था, और गुटनिरपेक्ष आंदोलन की तर्ज पर नेतृत्व करने की क्षमता भी थी; और ऐसे मे "टूटे हुए देशो (इंसानो) की तुलना मे मजबूत नवस्वतंत्र (बच्चो) का निर्माण आसान और अधिक लाभकारी था"

प्रश्न यह उठता है, कि टूटे हुए इंसानो की मरम्मत करना मुश्किल क्यो है? वही मजबूत बच्चो का निर्माण करना आसान कैसे हो सकता है?

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

क्या टूटे हुए इंसान कोई काम के नही रह जाते, हमे उनका परित्याग कर देना चाहिए? या उन्हे भी विकास की मुख्यधारा मे लाना चाहिए।
यह भी असमंजस है कि मजबूत बच्चो को, उनके पिछड़े व्यस्को से जोड़ने मे प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए या सहयोग एवं सामंजस्य रखना चाहिए।

अपनी यात्रा इतिहास के कुछ पन्नो को पलटकर शुरु करते है। स्वतंत्रता संग्राम के समय उदारवादी दल (कांग्रेस मे) अपने संघर्ष के पुराने और गैरप्रभावी तरीको से आगे बढ़ना चाह रहा था, परंतु आजादी की लड़ाई मे मजदूर, दलित, युवा, महिलाओ, कृषको, आदिवासियो, शिल्पकारो, अल्पसंख्यको को शामिल किए बिना हम अपना लक्ष्य प्राप्त नही कर सकते थे;
महात्मागाँधी जी ने इन मजबूत बच्चो की रहमियत को समझा और उनको सही दिशा भी दी, क्योकि पारंपरिक रूढ़िवादी वर्ग की तुलना मे,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इन्हे राह दिखाना आसान था, ऊपर से ये वर्ग कोई पूर्वाग्रह एवं रूढ़िवादिता से ग्रसित नही थे, ऐसे मे जब इन सभी नवोदित वर्गो ने आजादी की लड़ाई मे हिस्सा लिया, हम स्वतंत्रता और समानता के अधिक करीब पहुँच सके।

हम आर्थिक परिपेक्ष्य की ओर रूख करे, तो देख पाते है कि सरकार का प्रयास रूग्ण हो चुकी आर्थिक इकाइयो के बजाय, नए नए औद्योगिक केंद्र और SEZ (विशेष इकोनामिक जोन) खोलने पर होता है।

आज जीर्ण हो चुकी इकाइयो के बदले, MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों) पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि एक ओर ये नवीन तकनीकी अपनाने का प्रयास करते है, वही रोजगार प्रदान करने मे भी सहायक होते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आज ग्रीनफील्ड परियोजनाओ मे अधिक FDI (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश) प्राप्त होता है, क्योकि कंपनियां चाहती है कि वे ऐसी जगह पूंजी लगाए, जहाँ वे अपने नए तरीके से प्रौद्योगिकी संचालन एवं श्रम शक्ति को प्रशिक्षित कर सकें।

राजनीतिक परिपेक्ष्य मे देखे तो हम पाते है आज राजनीति मे युवाओ को अधिक तरजीह दी जा रही है, युवा संसद जैसे कार्यक्रम जो कि युवा शक्ति को राजनीति की ओर आकर्षित करने के लिए प्रयासरत है। क्योकि बदलते राजनीतिक वातावरण मे नए मूल्यो की स्वीकार्यता के लिए पुरानी पीढी के साथ साथ नई पीढी की भी जरूरत महसूस हुई है, और यही कारण है कि 18 वी लोकसभा मे लगभग 13% सांसद, 35 वर्ष से कम उम्र के पहुँचे है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

धर्म और संस्कृति का चरण बदलाव का संकेत दे रहा है, आज नवीनपीढी सहिमत मानदंडो के बजाय आधुनिकीकरण यहाँ तक कि पश्चिमीकरण को अधिक महत्व दे रही है;

कमजोर आत्मशक्ति या रूढिगत धारणा वाले व्यक्तित्व अंधविश्वास, संप्रदायवाद, धार्मिक उन्माद के जाल मे आसानी से फँस जाते है, उन्हे दूर करने हेतु कई प्रयास किए भी जाते है, पर उनको यथास्थितिवाद से इतना लगाव होता है कि वे उसी मे मगन रहना चाहते है, वही किशोर।तरूण अवस्था मे यदि धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक सदभाव का सही पाठ पढाया जाए, तो जो फसल होती है वह - भगतसिंह, राजा राममोहनराय, महात्मा गांधी जैसे चरित्रो को तैयार करती है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अंतर्राष्ट्रीय परिपाटी मे हमने देखा, जब सोवियत संघ अपनी आखिरी अवस्था मे था, और चीन अपने विकास की गाथा लिखने के लिए तत्पर था, ऐसे मे साम्यवाद ने अपना लाल झंडा चीन को थमाया, क्योकि वह एक मजबूत बच्चे के तौर पर सामने आ रहा था।

नैतिक मानदंडो की सबसे बडी विशेषता यह है कि ये एक समयकाल / परिस्थिति के अनुरूप चलते रहते है, और आवश्यकता होने पर स्वयं मे बदलाव भी करते है, पर इन बदलावो से स्वयं को जोड़ना, एक टूटे हुए व्यक्ति और मजबूत बच्चे मे फर्क सामने लाता है।

विवाह संस्था की बात ही ले लें, आज लिव्इनरिलेशनशिप, अंतर्जातीय विवाह, समलैंगिक विवाह, जैसी संरचनाए समाज मे अपना स्थान बना रही है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ऐसे मे एक ओर नयी पीढी तो इन्हे उत्सुकता से अपनाने मे योगदान दे रही है, वही एक वर्ग आज खाप पंचायत, ऑनर किलिंग, घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना को प्रश्रय दे रहा है।

हालांकि यह प्रक्रिया और संवाद नया नही है, जब 1829 के समय राजा राममोहनराय सती प्रथा समाप्ति और महिलाओ के सम्मान मे आवाज उठा रहे थे, तब राधाकांत देव जैसे बुद्धिजीवी उनका विरोध कर रहे थे।

तो अपनी चर्चा मे हम यह तो समझ सकते है कि टूटे हुए इंसान का तात्पर्य केवल वृद्ध/पिछडी पीढी से नही है, ऐसा व्यक्ति जो अपनी इच्छाशक्ति मे कमजोर हो, बिखरा हो, और अपनी विचारों की चारदीवारी मे कूपमण्डूक की तरह हो, उसे भी टूटा हुआ इंसान ही माना जाएगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पर प्रश्न यह भी उठता रहा है, कि क्या टूटे हुए लोगो का अलगाव कर देना चाहिए? उनकी मरम्मत नही करना चाहिए?

वास्तव मे कल्याणकारी राज्य का यह कर्तव्य होता है कि प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा को बनाये रखते हुए सर्वांगीण विकास का प्रयास करें, हमारा संविधान भी DPSP/नीति निदेशक तत्व, प्रस्तावना और सभी को समान अधिकारो और कर्तव्यो की बात करता है, यहाँ तक कि वंचित/पिछड़े/कमजोर वर्गो को अतिरिक्त सहायता देने की बात करता है।

एक बात यह भी मन मे आती है कि इन टूटे हुए वर्गो की मरम्मत करके हमे (सभ्य समाज) क्या हासिल होगा?

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसे वृहद परिपेक्ष्य मे देखने की जरूरत है, एक व्यक्ति की कमजोरी, उसके समाज, राष्ट्र को भी प्रभावित करती है, और वही वैश्वीकरण के दौर मे जहाँ एक देश मे घटित घटना अन्य विश्व पर भी प्रभाव डालती है, ऐसे मे हमारा कर्तव्य बनता है कि हम सबको साथ लेकर चलें।

आज भारत पाँच ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी जैसे महत्वकांक्षी लक्ष्यो के साथ आगे बढ रहा है, ऐसे मे युवा शक्ति और जनांकिकी लाभांश के साथ हमारा प्रयास यह भी होना चाहिए कि वृद्ध/आश्रित जनो, महिलाओ, पिछड़े आदिवासियो, जनजातियो को साथ मे लेकर आगे बढें।

एक दिलचस्प मुद्दा यह भी है कि मजबूत लक्ष्य आसान तो है, परंतु उन्हे सम्भालना और सही राह पर बनाए रखना भी आवश्यक होता है,

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उदा. के लिए औपनिवेशिक सत्ता से स्वतंत्र अफ्रीकी राष्ट्र आज भी सैन्यवाद, तख्तापलट, मानवाधिकार उल्लंघन, हिंसा से पीड़ित है; ऐसे मे सभी देश विश्व पटल पर मिलकर इस मुद्दे को हल करने का प्रयास कर रहे है।

आज जब युवा पीढी नशे का भटकाव, हिंसा, गलत आचरणो मे संलिप्त होती है, तो वही टूटे हुए कमजोर हृदय और उनकी ममता (चाहे वह वृद्ध मातापिता के रूप मे हो, या धार्मिक सांस्कृतिक नैतिक परिदृश्यो), युवा पीढी को सुधारने और उनके वास्तविक लक्ष्यो का मार्ग दिखाती है।

तब ऐसे कौन से प्रयास हो सकते है जो टूटे हुए इंसानो को सशक्त और बच्चो मे मजबूती के बीच सामंजस्य ला सकते है? हम चरणबद्ध तौर पर देखते है—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वैज्ञानिक अनुसंधान जैसे अटल इनोवेशन मिशन, STEM मे महिलाओ की सहभागिता बढाना, और प्रौढ शिक्षा मे बढोत्तरी करना।

सरकारी प्रयासो मे वृद्ध जनो, कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण की योजनाएँ जिनसे समाज का अंतिम व्यक्ति भी राष्ट्र निर्माण मे हिस्सा ले सके।

चर्चा की संस्कृति विकसित करना -

'अनुकरण की संस्कृति सभी समाजो मे पाई जाती है, पर शिक्षा का वरदान कुछ ही समाजो मे है, और आश्चर्य नही है कि कुछ ही समाज श्रेष्ठ है,' — वाल्टर बेजहॉट

वास्तविकता मे मजबूत बच्चे हमारे राष्ट्र का भविष्य लिखने वाले होते है, किसी भी राष्ट्र की युवा शक्ति उसे विश्व पटल पर,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

न केवल बड़े श्रम बल के रूप मे प्रदर्शित करती है, बल्कि उस देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक शक्ति को भी सामने लाती है, तभी स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओ से आह्वान किया था - 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रूको मत'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Topic:

हमारा सबसे बड़ा मानवीय साहस चेतना का विकास है।

कहा जाता है कि व्यक्ति का जन्म दो बार होता है, एक बार तो तब, जब वह माँ की कोख से निकलकर, इस धरती पर पैदा होता है; वही दूसरी बार तब, जब उसमे मानवीय चेतना का विकास हो जाता है कि वह क्या है? और उसका कर्तव्य क्या है? वह चेतना का विकास ही था, जिसने सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध बनाया; वर्धमान को महावीर स्वामी बनाया; और शिवा को छत्रपति शिवाजी के रूप मे सामने लाया।

चेतना को शब्दो मे पिरोना आसान नही है, परंतु फिर भी हम यह मान सकते है, कि चेतना एक ऐसी बौद्धिक अवस्था है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जहाँ व्यक्ति उच्चतर सद्गुणों और उच्च सत्यों की ओर रुख कर पाता है, वह अपने आत्मबल की ताकत से अपने कंफर्ट जोन (सुषुप्तता) को दूर कर पाता है, और इसे प्रत्येक संकट में या विकट परिस्थितियों में भी धैर्य का दामन थामे रखने की शक्ति देता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि चेतना का विकास कैसे होता है? क्या यह सभी में समान होती है? क्या चेतना का दिखाया गया मार्ग सदैव ही सही होता है? इसे सबसे बड़ा साहस मानने के पीछे कारण क्या है? चेतनाशून्य होने से क्या तात्पर्य हो सकता है?

इन सभी प्रश्नों के जवाब ढूंढने का प्रयास करते हैं-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

चेतना का विकास एक लंबी प्रक्रिया भी हो सकती है, वही कोई आकस्मिक घटित घटना भी।

उदा. के लिए → महात्मा गाँधी जी की चेतना का विकास सत्य के अनुप्रयोगो, अपनी माता की दी गई शिक्षाओ और अपने बड़े राजनीतिक अनुभव के माध्यम से विकसित हुई थी।

वही महात्मा बुद्ध ने जब (4 (चार) दृश्य - बूढा व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, एक मृत व्यक्ति, और सन्यासी) को देखा, तब उनका मन जीवन की सांसारिक मोहमाया से उठ गया, और उन्होने कहा कि 'सृष्टि दुखमय है'

कई बार मानव को अपने साहसीपन पर संशय भी हो जाता है, और वह चेतना के उस स्तर तक नही जा पाता है, तब उत्प्रेरक (गुरु की भूमिका भी देखी जाती है.

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रामायणकाल का एक संदर्भ है, जहाँ जामवंत हनुमान जी को प्रेरित करते है, कि वह समुद्र पार कर सकते है और उन्हे उनकी क्षमता का एहसास दिलाते है।

परंतु चेतना का विकास सभी मे समान नही होता है एक सामान्य व्यक्ति के लिए सही - गलत मे सही पहचान करना ही, चेतना का विकास माना जाता है। वही किसी दार्शनिक के लिए तत्व मे तात्विक भेद तक ज्ञान होना, और जड - चेतन के मूल को जानना, चेतना का विकास माना जा सकता है, अर्थात इसका कोई वस्तुनिष्ठ पैमाना नही है, ये आत्मनिष्ठता के निकट अधिक है, क्योकि अनैतिक व्यक्ति के लिए चेतना के होने / न होने से कोई खास फर्क नही होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अब हमे यह समझना होगा कि जब चेतना को मानवीय साहस की सबसे ऊँची श्रेणी माना जाता है, तो इसके क्या सदपरिणाम निकलते है।

हम अमेरिकी गृहयुद्ध के संदर्भ में देखते है, सालो से चली आ रही दासता / गुलामी को दूर करने का साहस अब्राहम लिंकन ने दिखाया, उनसे पूर्व प्रयास तो किए गए, परंतु दृढता, प्रतिबद्धता, समर्पण की भावना, जो कि चेतना का मूल आधार होती है लिंकन ने वह प्रदर्शित किया, और गुलामी की बेड़ियों से अमेरिका को मुक्त करवाया।

ऐसा ही प्रयास हम रंगभेद समाप्ति में भारत रत्न सम्मानित नेल्सन मंडेला को देख सकते है, इनके अनथक प्रयासो और वर्षों के संघर्ष के बाद ही दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति हो सकी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सावित्रीबाई फुले का जीवन भी चेतना के सर्वोच्च शिखर को दिखाता है, क्योंकि जब दलित महिलाओं और बच्चों की सहायता करते समय लोगो द्वारा पत्थर बरसाये। गालियाँ दी गई, वे तब भी हार नहीं मानी, डंटी रही।

राजनीतिक गतिरोधों को आज पूरा देश देखता है, राजनीतिक अपराधीकरण, वोटबैंक पोलिटिक्स, तुष्टीकरण - ध्रुवीकरण की तुच्छ नीतियाँ, धर्म-जाति आधार पर विभाजन, बढ़ता राष्ट्रीय विरोध, भ्रष्टाचार का चर्मोत्कर्ष जैसी राजनीतिक समस्याएँ आज हमारे सामने आ रही है, इनसे निपटने के लिए उच्च मानवीय चेतना की आवश्यकता है, जहाँ कानूनों, नैतिक मूल्यो का पालन हो, और व्यक्ति से व्यक्ति को जोड़ने का प्रयास किया जाए। ऐसे में चेतना के स्तर पर जोड़ने के प्रयास, व्यवहार में भी परिलक्षित हो सकेंगें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानवीय चेतना का विकास नैतिक मानदंडो मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; आज समाज मे गलत के खिलाफ खड़े होने के लिए और सच को सशक्त करने के लिए मुट्ठी भर लोग ढूढंना मुश्किल हो जाता है; समाज मे बौद्धिकता का स्तर इतना कमजोर नही है, परंतु उपभोक्तावादी संस्कृति और अधिक प्राप्त करने की चाह, कई बार चेतना पर भी हावी हो जाती है

कुछ ऐसे प्रशासनिक अधिकारी हमारे सामने मिसाल होते हैं, जो अपनी चेतना के बल पर सदैव कर्तव्यपालन हेतु तत्पर होते हैं, हमने - संजीव गोयनका, टी.एन.शेषन, अशोक खेमका, ई.श्रीधरन, आमस्ट्रांग पामे जैसे प्रशासनिक वर्ग को भी देखा है जो कि अपने आत्मसाहस और उच्च चेतना स्तर का उदा. प्रस्तुत करते है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हमने विभिन्न उदाहरणों से चेतना के विभिन्न पक्षों को समझा, तब हम एक बात सभी में समान पाते है, वह है साहस का गुण।

ऐसे मे इनके आपसी संबंध को भी समझना होता है, चेतना के स्तर तक पहुँचने के लिए व्यक्ति मे आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वास, आत्मसाहस जैसे गुणो की आवश्यकता होती है। बुद्ध और गाँधी जैसे विद्वान मानते है कि 'युद्ध मे शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले की अपेक्षा, स्वयं पर नियंत्रण/विजय प्राप्त करने वाला अधिक श्रेष्ठ होता है'

ऐसे मे हम यह समझ सकते है कि साहसी व्यक्ति ही चेतना के स्तर पर पहुँच पाता है, और बुद्ध धर्म मे माना जाता है कि आपके अगले जन्म मे आत्मा न जाकर 'चेतना' ही प्रवाहित होती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अब प्रश्न यह भी उठता है कि चेतना हमे अलग कैसे बनाती है? आज मानव एवं पशुओ मे एक सबसे विशिष्ट अंतर है - मनुष्यो मे चेतना का होना। ताकतवर एवं कमजोर मे भी जो मूल अंतर है, वह भी चेतना के होने / न होने से होता है

वास्तविकता मे चेतना हमे सद्भावना, साहस, दृढ़ता, लग्न, निष्पक्षता, त्याग, सेवा, समर्पण की भावना सिखाती है। यहाँ तक कि मनुष्य मे जो समानुभूति की विशेषता होती है, वह भी चेतना के कारण अपना आकार लेती है

हालांकि चेतना के संबंध मे कुछ द्वंद्व भी है जिसमे पहला द्वंद्व यह है कि क्या चेतना सापेक्ष या निरपेक्ष?

चेतना मूल्यो से संबद्ध होती है, यह अपने आप मे सामान्यत: निरपेक्ष होती है, ऐसे मे कई बार नैतिक दुविधाएँ भी उत्पन्न होती है.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उदा. के लिए, चेतना का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आपको कैसी शिक्षा दी गई, और आपने उसको कैसे संयोजित किया।

चेतना की शक्ति का उपयोग सुकरात और अरस्तू ने किया और दर्शन को नए आयाम दिए, वही चेतना की शक्ति को जोड़ते हुए सिकंदर ने विश्व विजय का ख्वाब देखा।

चेतना के उच्च स्तर पर जहाँ अल्वा एडीसन बल्ब के माध्यम से पूरे दुनिया में प्रकाशित चेतना को फैलाते हैं, वही अमेरिकी वैज्ञानिकों ने उसी प्रबुद्ध चेतना से परमाणु बम का निर्माण किया, जिसने हजारों लोगों की जान ली।

वह चेतना ही थी, जिसने पशुपालक और अर्द्धनग्न मानव को कृषि में ढाला, फिर औद्योगिक क्रांति में लेकर आई और आगे कम्प्यूटर युग तक जोड़ा,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तो वही चेतना जैविक और रासायनिक हथियारो के निर्माण मे दुरुपयोग की जा रही है

चेतना के स्तर पर ही राम करुणा और मर्यादा पुरुषोत्तम की मूर्ति माने जाते है, वही रावण अपनी कुटिलता, धूर्तता और अनैतिकता को प्रदर्शित करता है

कभी कभी सामान्य जीवन मे यह भी देखा जाता है कि चेतना का गुण मानवीय सीमाओ तक बंधा नही है, हम पशुओ मे भी चेतना अनुभव कर सकते है, चाहे तो आर्मी मे सेवारत प्रशिक्षत कुत्तो का दल, या फिर मानवीय अंर्तसंबधो से जुडे गौवंश और हाथी जैसे जानवर, हम इनमे भी चेतना का अनुभव कर पाते है

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस पूरे वक्तव्य मे हमने चेतना की महिमा को समझा है, अतः चेतना को उच्चतर मूल्यो की श्रेणी मे गिना जाता है. हम अपने जन्म से लेकर संपूर्ण जीवन मे जो कुछ भी सीखते है, वह चेतना का हिस्सा बनता जाता है

कुछ विरले ही होते है जो अपने साहस के बल पर, और अपनी अंतरात्मा को प्रशिक्षित करके, उत्कृष्ट मूल्यों को ग्रहण करते हुए चेतना के सर्वोच्च स्तर पर पहुँच पाते है

आज मानव जीवन मे एक सर्वोच्चता के स्तर पर पहुचँना, न केवल व्यक्ति के स्तर पर बल्कि समाज, राष्ट्र, विश्व स्तर पर भी आवश्यक है, जिसमे साहसयुक्त चेतना अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपने कंफर्ट ज़ोन को त्यागना, और विविधता एवं समन्वयता मे उत्कृष्ट प्रयास करना, महान व्यक्तित्वो की ही निशानी है; इसीलिए संसार मे - अशोक का स्थान, अकबर का स्थान, और गांधी - सुभाष का स्थान विशिष्ट है, जिसमे उनकी चेतना का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation